भजन

तर्ज– तुम जो मिले जाने जां

तुम जो मिले मेहरबां,दिल तो तुम्हारा हो गया
जीव को भी आशा यहीं थी,तेरे जलवों में खो गया
इस मेहरबानी का शुक्रीया–2
निसवत को अपनाया,दिल लिया सुख दिया

1– कहना तो है हमको,पर सुनसी सारा जहां
खिलवत के सुख सारे,ले आये मेहरबां
वाणी का सिलसिला,खातिर तो हमारे ही किया

2– खेल की रट जो लगी थी,ले आये हमको यहां
इश्के बुजरकी आपकी,रह पाये तुम न वहां
इश्क का यहीं कायदा,करते हो वफा तुम सदा

3– अंगना को अंग दीजे,और लीजे अंगना के अंग
पास बुलाओ प्रीतम,देओ नेहेचल का वोह रंग
हम तुम एक हैं पिया,क्यूं कर हम रहें फिर जुदा

4– इश्क सुराही का है,ये प्याला मदमाता
नया पुराना न हो,नित नौतन रंग लाता
इश्के सुराही आब,लेवें हम यहाँ मिने ख्वाब